International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गांधीवादी शिक्षा दर्शन: वर्त्तमान शिक्षा व्यवस्था के पुनर्निर्माण की दिशा में एक अध्ययन

श्री विनय कुमार

सहायक प्राचार्य, पटना ट्रेनिंग कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय।

सार

महात्मा गांधी ने आजीवन सत्य, अहिंसा, समानता, नैतिकता, एकता और न्याय के लिए संघर्ष किया। वे अहिंसा तथा सत्य के दिव्य संदेशवाहक थे, उन्होंने कहा था कि " मै किसी से द्वेष नहीं करूँगा। मै झूठ को सत्य से जीतूंगा और असत्य से संघर्ष करता हुआ सभी कष्टों को सहन करूँगा"। उनके संघर्ष कभी भी व्यक्तिगत नहीं रहे, बल्कि उन्होंने सम्पूर्ण जनमानस को एक परिवार माना। उनके संघर्षपूर्ण जीवन से कई तरह के दर्शनों का साक्षात्कार होता है, जिसमें उनका शिक्षा-दर्शन बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। महात्मा गाँधी का सामाजिक एवं राजनितिक क्षेत्रो में योगदान इतना व्यापक और दर्शनीय है कि शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के तरफ उतना ध्यान नही गया, जितना की दिया जाना चाहिए। बचपन में हम सभी ने "गांधी जी की चीनी वाली कहानी" सुनी होगी। हम लोगों ने एन.सी.ई.आर.टी की पुरानी पुस्तकों में अध्याय की शुरुआत के पहले " गांधी जी का जन्तर" शीर्षक नाम का सन्देश भी पढ़ी होंगी एवं "गाँधी जी के तीन बंदर" के सन्देश को भी पढ़ा होगा, ये सभी प्रेरणाएं आज तक हमारे मस्तिष्क-पटल पर विराजमान है। प्रस्तुत आलेख में गांधी जी द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्य जैसे:-बुनियादी शिक्षा व्यवस्था, सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण, शांति- अहिंसा एवं नैतिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा एवं आदर्श अध्यापक के निर्माण में गाँधी जी के शैक्षिक मूल्य, मातृभाषा में शिक्षा के साथ-साथ स्त्री शिक्षा, गाँधी जी के मूल्यों पर आधारित राजनीति का स्वरूप के सन्दर्भ में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की पुनर्रचना पर प्रकाश डाला जायेगा।

संकेत शब्द :- बुनियादी शिक्षा, सर्वांगीण विकास, सत्याग्रह, शिक्षा दर्शन, शैक्षिक मूल्य, आदर्श अध्यापक, पुनर्रचना, गाँधी जी का जंतर, गाँधी जी के तीन बन्दर एवं सात सामाजिक बुराई।

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी जी ने ना केवल मानव जीवन के विविध पक्षों से सम्बंधित बातो को अपने दार्शनिक विचार से अभिव्यक्त किया, बल्कि उसे स्वयं के जीवन में आत्मसात भी किया। उनका जीवन दर्शन उनके व्यवहार में परिलक्षित होता था, यही वजह है की उनके आदर्श एवं नैतिकता से भरे सत्याग्रह आन्दोलन में अंग्रेजो को दक्षिण आफ्रिका एवं भारत में जायज मांगों को मांगना पड़ा। चंपारण सत्याग्रह का आन्दोलन जिसमे चंपारण के किसानो की दशा सुनकर पंडित राजकुमार शुक्ला के बुलाये जाने पर वे चंपारण आयें। यह चंपारण सत्याग्रह ना केवल राजनितिक एवं सामाजिक परिवर्तन का सूत्रधार बना बल्कि शैक्षिक परिवर्तन की प्रयोगशाला भी बना। महात्मा गाँधी का वैभव और प्रभाव ऐसा था कि उन्हें जनता का आपर जनसमर्थन मिलता, वही दूसरी तरफ अंग्रेजो पर उनकी मांगे पूरा करने का दबाव भी होता। राजनितिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में किये गये कार्यों की वजह से महात्मा गाँधी को बापू कहा जाने लगा। गाँधी जी भारतीय ज्ञान परम्परा के वैभव और इतिहास से भली भांति परिचित थे। चुकी अंग्रेजो के द्वारा भारतीय शिक्षा व्यवस्था को बहुत कुठाराघात पहुचाया गया। शिक्षा व्यवस्था के जरिय शासक वर्ग समाज पर अपना नियंत्रण व्यापक और स्थाई बना सकते है, यह बात अंग्रेज भली भांति जानते थे, जैसा की थॉमस बेबिंगटन मैकाले ने 2 फरवरी 1835 को कहा था कि:

"हम अपने सीमित संसाधनों के बल पर सभी लोगों को शिक्षित नहीं कर सकते है। ऐसे वर्ग का निर्माण करना होगा जो मध्यस्थ की तरह हमारी बात उन लाखों लोगों तक पहुंचाए जिन पर हम शासन कर रहे है। ऐसा वर्ग जिसका खून और रंग तो हिन्दुस्तानी होगा, मगर जिसकी रूचियां,

नैतिक मूल्य और बुद्धि अंग्रेजी होगी "। अंग्रेजी शासन के पूर्व हिन्दुस्तान में शिक्षा व्यवस्था का व्यापक और प्रभावशाली तंत्र था, जो हर जाति, वर्ग और धर्म के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करता था। यहाँ पाठशाला, टोल, मदरसा और गुरुकुल में शिक्षा का स्तर उस वक्त के इंग्लैण्ड के स्कूलों से कहीं ज्यादा बेहतर था। इसी कारण गाँधी ने इंग्लैण्ड में 20 अक्टूबर 1931 को रायल इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंटरनेशनल अफेयर्स के मंच से भाषण देते हुए कहा था :

" मैं बगैर किसी भय के कहता हूँ कि आज की तुलना में भारत पचास या सौ साल पहले अधिक साक्षर था। भारत आने के बाद अंग्रेज प्रशासकों ने यहाँ की चीजों को यथावत स्वीकार करने के बदले उन्हें उखाड़ना शुरू किया। उन्होंने मिट्टी खोदकर जड़े बाहर निकाल कर देखीं और उन्हें वैसा ही खुला छोड़ दिया और इस तरह वह सुन्दर वृक्ष नष्ट हो गया" । गाँधी जी का ऐसा मानना था कि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से सामाजिक कुरीतियों के साथ-साथ रोजगार जैसी समस्या से निजात पाया जा सकता है और भारत को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। इस प्रकार महात्मा गाँधी ने शिक्षा के कई आधारभूत संप्रत्यय को स्पस्ट किया साथ ही सर्वोदय एवं बुनियादी शिक्षा के माध्यम से भारतीयों को स्वावलंबी, आत्मनिर्भर बनाने के लिए बुनियादी विद्यालय स्थापित किए। केवल वर्धा शिक्षा योजना को ही उनकी शिक्षा संबधी दर्शन मान लेना उचित नहीं होगा क्योंकि उन्होंने शिक्षा सम्बंधी विचारो में उन सब शाश्वत जीवन मूल्यों पर विचार किया है जो जीवन के घटक है।

गाँधी द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों को वर्त्तमान शिक्षा व्यवस्था में निम्न तरीकों से पुनर्रचित किया जा सकता है:-

- ***बुनियादी शिक्षा व्यवस्था एवं राष्ट्रिय शिक्षा नीति-2020***

बुनियादी शिक्षा व्यवस्था में तत्कालीन समस्यायों से निजात पाने के साथ-साथ लोगो में आपसी भाई चारा कायम करने की शक्ति थी। इस बुनियादी शिक्षा व्यवथा में शिक्षण के साथ-साथ प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसमें विद्यालय में विद्यार्थी पढाई के साथ-साथ विद्यालयों में उपयोग होने वाले अधिकांश वस्तुयें बनाया करते थे जैसे :- झाड़ू, पांति, कुर्सी ,टेब , बेंच, टोकरी, रस्सी के साथ साथ चरखा से सूत बनाना आदि काम प्रमुखता से होता था। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा वर्तमान समय में प्रयोग किया जा सकता है। वर्तमान समय में झाड़ू ,कुर्सी ,टेबल ,टोकरी ,रस्सी और सूत बुनना भले ही ज्यादा प्रासंगिक न लगे फिर भी हम वर्तमान आवश्यकता जैसे:- बागवानी, पर्यावरण संरक्षण, डेकोरेशन(सौंदर्यीकरण), पाककला, स्वास्थ्य शिक्षा(प्राथमिक उपचार शिक्षा), सोशल मिडिया, बैंकिग जागरूकता, साइबर फ्रौड(बुल्लिंग, डिजिटल अरेस्ट), कृषि शिक्षा (प्राकृतिक कृषि) जैसे आधुनिक मुद्दों एवं प्रपंचों से निजात पाने के लिए शिक्षा में आधारभूत तत्वों के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है। इसके साथ ही नई तालीम की बुनियादी बातों जैसे हाथ से काम करना, आत्मनिर्भर बनाना, पढाई के साथ साथ कौशल को सिखाना आदि बाते शिक्षा व्यवस्था के लिए स्वर्णिम अवसर प्रदान कर सकता है। ये सभी बाते हाई स्कुल तक निश्चित रूप से बच्चों को सिखाई जानी चाहिए। शिक्षा कौशल आधारित होनी चाहिए जिस प्रकार इंजीनियरिंग,डाक्टरी की पढाई कौशल आधारित है, उसी प्रकार सामान्य ग्रेजुएशन पाठ्यक्रम में भी सम्बंधित विषय से सम्बंधित क्रियात्मक पक्ष के कौशल का ज्ञान दिया जाना चाहिए। अधिकांश विद्यार्थी को ये पता रहता है कि उनका विषय क्या है परन्तु ये पता नहीं रहता की उनके द्वारा पढ़े गए विषय का सामान्य जीवन में क्या उपयोग है। इसलिए शिक्षा कौशल आधारित होनी चाहिए ना की डिग्री आधारित इसके लिए अब एक बार फिर से सभी बुनियादी विद्यालयों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, जिसमे बुनियादी शिक्षा की मूल भावना को बनाये रख कर, उसे आधुनिक परिपेक्ष में पुनः लागु किया जा सके। ज्ञातव्य हो की देश में सबसे पहले बुनियादी शिक्षा पर आधारित आश्रम की स्थापना महात्मा गाँधी ने चंपारण यात्रा के दौरान वर्त्तमान पूर्वी चंपारण जिले के ढाका प्रखंड के बड़हरवा लखनसेन में 13 नवम्बर 1917 को किया था, आगे वृन्दावन एवं भितहरवा आश्रम भी स्थापित हुए जो बाद में बुनियादी विद्यालय में तब्दील हो गए। अभी वर्तमान में बिहार में 391 बुनियादी विद्यालय है, बिहार विभाजन से पूर्व 518 बुनियादी विद्यालय थे। इन सभी बुनियादी विद्यालय के पास जमीन की कमी नहीं है, साथ ही बिहार एवं झारखण्ड जैसे राज्यों में इसकी उपयोगिता बहुत ज्यादा हो सकती है क्योंकि देश में रोजगार के लिए सबसे ज्यादा पलायन इन्ही राज्यों से होता है और उसमे अधिकाश अकुशल मजदुर होते है। अगर बुनियादी विद्यालय के बुनियाद को पुनः मजबूत किया जाय तो आने वाले समय में पलायन कम करने के साथ-साथ बेरोजगारी के समस्या से निज़ात पाया जा सकता है। पूर्व में बिहार सरकार ने प्रयास किये थें, वर्ष 2005 में नितीश कुमार जब मुख्मंत्री बने तब उन्होंने वर्ष 2006 में मुचकुंद दुबे समिति बनाई थी, परन्तु 2007 में रिपोर्ट आने के बाद अभी तक कोई साथक प्रयास नहीं किये गये। अब इसमें केंद्र सरकार को आगे आकर इन विद्यालयों के विकास का जिम्मा उठाना चाहिए। इससे ही भारत बोध की संकल्पना को आकार दिया जा सकता है, यही महात्मा गाँधी को सच्ची श्रध्दांजलि देने का सबसे अच्छा तरीका हो सकता है।

- ***सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण***

गाँधी जी के शैक्षिक मूल्यों में शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति का सर्वांगींण विकास था, यानि HEAD, HAND और HART का विकास। शिक्षित व्यक्ति में बौधिक विकास के साथ-साथ भावात्मक एवं क्रियात्मक विकास भी होना चाहिए। वर्त्तमान समय में जहाँ शिक्षा और शिक्षित व्यक्ति की सफलता का आकलन नंबर और ग्रेड से किया जाता है, अच्छे शैक्षिक संस्थान की पहचान नौकरी, उच्चतम वेतन, विदेशी पहचान से हो रही है। वही आज विद्यार्थी IIT,NIT,IIM,मेडिकल(MBBS) जैसे महत्वपूर्ण सस्थान में नामांकन लेने के बावजूद अवसाद से घिर जा रहे है और आत्महत्या तक करने पर मजबूत हो रहे है। इसलिए शिक्षा का सफलता के साथ साथ नैतिकता, सामाजिकता एवं चरित्र निर्माण से सामंजस्य होना चाहिए। वर्त्तमान शिक्षा के माध्यम से केवल रोजगार को लक्ष्य बनाया जाता है जबकि गाँधी जी चरित्र निर्माण को शिक्षा का महत्वपूर्ण लक्ष्य मानते थे। हम सभी गाँधी जी के तीन बन्दर का नाम बचपन से सुनते आये है, जिसमे पहला बन्दर कहता है की बुरा मत देखो, दूसरा कहता है बुरा मत सुनो और तीसरा बन्दर कहता है की बुरा मत कहो, ये जो सन्देश है इसका और भी ज्यादा प्रसार किया जाना चाहिए। सभी तरह के शिक्षा का लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए, बिना चरित्र के शिक्षा क्या है ? और वह चरित्र ही क्या जिससे व्यक्ति की शुद्धता को बढ़ावा ना मिले। भारतीय दर्शन में शिक्षा का पर्याय चरित्र एवं अनुशासन रही है। आज शिक्षा के लिए विद्यार्थी शहरो की ओर रुख कर रहे है और वहां जाकर वे अपने संस्कार को भूल जा रहे है चुकी शहरो का पाश्चात्यीकरण हो चूका है जिससे विद्यार्थियों के चरित्र पर बुरा प्रभाव पड रहा है इसलिए सर्वांगीण विकास के साथ साथ चरित्र निर्माण पर भी जोर दिया जाना चाहिए।

- ***शांति एवं नैतिक शिक्षा और गाँधी जी जंतर***

गांधीजी की शांति शिक्षा का उद्देश्य अहिंसा और आपसी भाई चारे को बढ़ावा दिया जाना था। लोगो में आत्म नियंत्रण, सहिष्णुता और नैतिकता होना चाहिए जिससे दुनिया में जब भी हिंसा, संघर्ष और असहिष्णुता बढे तो व्यक्ति शांति के प्रयास करे। गांधीजी ने शांति के लिए अहिंसा को एक शस्त्र के रूप में माना। उनका ये भी कहना था, की शांति तभी स्थापित हो सकती है जब सभी व्यक्तियों के साथ न्याय एवं समानता का व्यवहार हों। उन्होंने विभिन्न विचारधाराओ एवं धर्मो के बीच सहिष्णुता एवं संवाद को बढ़ावा देने पर बल दिया। वर्तमान समय में बढ़ते हिंसा, बढ़ते तनाव से निपटने के लिए स्कूलों में शांति शिक्षा के साथ-साथ विश्वविद्यालय स्तर पर वैश्विक शांति एवं सहयोग से सम्बंधित विषयों को पाठ्यक्रम में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए। मै अपनी विद्यालयी शिक्षा के दौरान जब NCERT की पुस्तकों को पढता था उसमे सबसे पहले गाँधी जी का जंतर नाम का एक सन्देश पुस्तक की शुरुआत में लगभग हर वर्ग की पुस्तक में हुआ करती थी :

तुम्हे एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हे संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसका शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा?यानि क्या उससे उन करोडो लोगो को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे है और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त हो रहा है।

आज जिस प्रकार भाषा शिक्षा को विद्यालय से विश्वविद्यालय तक पढाया जाता है, उसी प्रकार शांति, अहिंसा एवं नैतिकता से सम्बंधित संप्रत्ययों को भाषा विषय से जोड़ते हुए पढाये जाने की आवश्यकता है। इसप्रकार महात्मा गाँधी की शांति शिक्षा केवल इतिहास के पन्नो का हिस्सा नहीं बल्कि वर्तमान समय की आवश्यकता है। वर्त्तमान राजनीति परिदृश्य में राजनेताओं के साथ-साथ सरकार के कर्मचारियों में भी शांति शिक्षा के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है । आज विश्व के समक्ष जहाँ तृतीय विश्वयुद्ध जैसे स्थिति बनी हुई है, रूस-यूक्रेन, इजरायल-फिलिस्तीन, भारत-पाकिस्तान, भारत-बांग्लादेश, भारत- चीन बांग्लादेश, अफगानिस्तान जैसे देशो में या तो युद्ध जैसी स्थिति है या आतंरिक अशांति है। इस तरह के हालत से निपटने के लिए गाँधीजी के राजनैतिक एवं सामाजिक दर्शन से सीखा जा सकता है साथ ही भारत एवं भारत से बाहर(दक्षिण अफ्रीका) में उनके द्वारा किए गए विभिन्न अहिंसात्मक आन्दोलन से प्रेणना लिया जा सकता है।

- ***अनौपचारिक शिक्षा एवं आदर्श अध्यापक***

शिक्षा औपचारिक या अनौपचारिक होती है। औपचारिक शिक्षा जहाँ स्कुल कालेज आदि में दिए जाते है वही अनौपचारिक शिक्षा फिल्मो, टेलीविजन, रेडियो, समाचारपत्र, परिवार आदि में मिलते है। महात्मा गाँधी के जीवन से प्रेरित एवं शैक्षिक मूल्यों पर आधारित बहुत फिल्मो का निर्माण हुआ है, जिसमे लगे रहो मुन्ना भाई(2006), हे राम (2000), गाँधी माय फादर (2007), द मेकिंग ऑफ़ द महात्मा(1996), गाँधी TO हिटलर(2011), डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर(2000), गाँधी(1982) प्रमुख है। उनके जीवनी पर आधारित पुस्तक :- गाँधी जीवन और आधुनिक दर्शन(जे.बी.कृपलानी), सौ साल पहले चंपारण का गाँधी(सुजाता), द ब्यूटीफुल ट्री एवं गाँधी जी द्वारा रचित पुस्तक सत्य के प्रयोग ,हिन्द स्वराज ,ग्राम सवराज और मेरे सपनो का भारत आदि पुस्तक एवं फिल्मो के माध्यम से गाँधी जी के जीवन दर्शन को समझ कर उससे प्रेरणा ली जा सकती है। आज जरुरत इस बात की है कि गाँधी जी के शैक्षिक मूल्यों पर आधारित लघु फिल्मो की एक सीरिज बने और नाटक का मंचन हो, जिसको सरकार भी प्रोत्साहित करें। आज राजनितिक लाभ लेने के लिए सरकार ऐसी फिल्मो को बढ़ावा दे रही है जिससे किसी तरह की नैतिक शिक्षा नहीं मिल पा रही है। बचपन में हम सभी ने "**गांधी जी की चीनी वाली कहानी**" सुनी होगी, *जिसमें एक बालक बहुत ज्यादा चीनी खाता है। उसकी इस आदत को छुडवाने के लिए उसकी माता उसे गाँधी जी के पास ले जाती है, क्यूंकि वह बालक गाँधी जो को अपना आदर्श मानता था। जब वह गाँधी जी के पास जाता है तब गाँधी जी उसे तुरंत चीनी छोड़ने के लिए नहीं कहते बल्कि उसे बाद में आने के लिए कहते है और ऐसा अनेक बार होता है क्यूंकि वे तब तक चीनी खाने से मना नहीं करते, जब तक कि वह खुद चीनी खाना नहीं छोड़ दिए।* गाँधी जी के दर्शन में आदर्श अध्यापक के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया गया है कि, छात्र अध्यापक द्वारा उन को सुनाई गई अथवा पढाई गई पुस्तकों से अथवा उनके दिए गए भाषणों से इतना ग्रहण नहीं करते जितना अध्यापकों के अपने जीवन से ग्रहण करते है। इसलिए अध्यापक को अपने व्यवहार से आदर्श स्थापित करना चाहिए।

- ***मातृभाषा में शिक्षा के साथ-साथ स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में***

महात्मा गाँधी मैकाले द्वारा प्रतिपादित अंग्रेजी शिक्षा के पक्षधर नहीं थे, उनका कहना था की हमारी मातृभाषा हमारा प्रतिबिम्ब है, हमारी मातृभाषा में कितनी ही कमियां क्यों न हो, फिर भी मै उससे एसे चिपका रहूँगा जैसे कि अपने माता से चिपटता हूँ। वही मुझे प्राणदायक दूध दे सकती है, विदेशी माध्यम ने हमारे बालकों को अपने ही देश में लगभग विदेशी बना दिया है। वर्त्तमान समय में राष्ट्रिय शिक्षा नीति-2020 एक बार फिर से मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा दे रही है और अब MBBS के साथ साथ IIT की पढाई भी हिंदी और अन्य भाषाओ में शुरू करने का प्रयास हो रहा है। इसके साथ ही स्त्री शिक्षा के बारे में गाँधी जी ने कहा कि मेरी दृढ राय है कि स्त्रियों को उतनी सुविधा अवश्य मिलनी चाहिए, जितनी की पुरषों को दी जाती है और आवश्यक हो, वहां विशेष सुविधाएँ भी मिले। गाँधी जी से प्रेरित होकर बिहार जैसे राज्यों में स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रावधान किये गए जिसमे छात्राओं के लिए साईकिल योजना, छात्रवृत्ति योजना, पोषक योजना के साथ-साथ शिक्षक की नौकरी में 50% क्षैतिज आरक्षण और अन्य में 33% आरक्षण का प्रावधान किया गया। यही नहीं पंचायती राज व्यवस्था में भी महिलाओं को 50% आरक्षण दे कर स्त्री शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया गया है।

- ***गाँधीवादी राजनीति एवं सात सामाजिक पाप***

राजनीति से आज ना तो विद्यालय अछूता है, ना ही विश्वविद्यालय और सभी स्तर की राजनीति व्यवस्था कमोबेश एक ही तरह की है। नेता चुनाव के समय प्रकट होते है धन, धर्म और बल से उनकी चुनावी रणनीति बनती है। विश्वविद्यालय स्तर पर भी स्तरहीन राजनीति देखने को मिल रही है। ऐसा इसलिए हो रहा है की युवा नेता गाँधी के संघर्ष, त्याग और बलिदान से प्रेणना लेने के बजाय वर्त्तमान नेताओं से ज्यादा प्रभावित हो रहे है। कोई भी विद्यार्थी या छात्र नेता शिक्षा, परीक्षा, नवाचार के लिए कभी आवाज नहीं उठाता, बल्कि आज विद्यार्थी नक़ल करने के लिए, कक्षा बंद करने के लिए, लेट नाईट तक छात्रवास खोलने के साथ-साथ रजनीतिक मुद्दों से प्रेरित होकर आन्दोलन कर अपने मूल्यवान उर्जा को नष्ट कर रहे है। आज गाँधी जी की 155 वीं जयंती पर सभी लोग उनको याद कर रहे है और उनके आदर्शो का बखान किया जा रहा है परन्तु उनके आदर्शो पर कोई चल नहीं रहा है। गाँधी जी ने **सात प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ** भी बताई है *जिसमे सिद्धांत के बिना राजनीती, कर्म के बिना धन, आत्मा के बिना सुख, चरित्र के बिना धन, नैतिकता के बिना व्यापार, मानवता के बिना विज्ञान और त्याग के बिना पूजा सम्मिलित है।* वर्त्तमान में बिहार सरकार द्वारा बापू के द्वारा बताये गये सात सामाजिक पाप प्रत्येक ईमारत पर लिखवाया गया है, यह एक बेहतरीन शुरुआत है। अगर गाँधी जी के द्वारा बताये गए रामराज्य(यूटोपियन सोसाइटी) की संकल्पना को साकार करना है तो हमें सत्य, अहिंसा,समानता और सादगी पर आधारित

एक आदर्श समाज की स्थापना करना होगा। इसके लिए गाँधी जी के शैक्षिक मूल्यों को आत्मसात करना होगा। वर्त्तमान समय में भी गाँधी के शैक्षिक मूल्यों एवं आदर्शो से प्रेरित होकर जो भी आन्दोलन हो रहे है, सरकार और समाज को भी उन आन्दोलन को समर्थन करना चाहिए, जिससे ऐसे राजनितिक मूल्यों को स्थापित किया जा सके और लोग हिंसा का सहारा छोड़े। देश की अधिकांश राजनीती पार्टी का निर्माण गाँधी जी के मूल्यों के आधार पर होता है परन्तु जब वे सत्ता में होते है तो उनके मूल्यों पर ध्यान नहीं देते है। वर्त्तमान में गाँधीवादी विचारधारा से प्रेरित लद्दाख में रहने वाले जाने माने शिक्षाविद और पर्यावरणविद सोनम वांगचुग़ ने लद्दाख क्षेत्र को विशेष अधिकार एवं पर्यावरण सुरक्षा के लिए मांग कर रहे है। उन्होंने मार्च 2024 में 21 दिन उपवास कर अपने मुद्दों के तरफ सरकार का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की। गाँधी जी के दांडी मार्च के तर्ज पर 1 सितम्बर 2 अक्टूबर 2024 तक लेह से दिल्ली तक का पैदल मार्च किया, जिसको "क्लाइमेट मार्च" नाम दिया गया है । इस तरह के गाँधीवादी लोग आज भी अपने समस्यायों को रखने के लिए गाँधी के शैक्षिक मूल्यों का सहारा ले रहे है और सरकार को भी इस तरह के आन्दोलन का संज्ञान लेना चाहिए (सोनम वांगचुक एवं लद्दाख निवासियों की मांग पर आलेख लिखे जाने तक सरकार के तरफ से सकारात्मक पहल की शुरुआत हो चुकी है, अनशन एवं शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन समाप्त हो गया है)। जिससे भारतीय लोकतंत्र में स्वास्थ्य लोकतान्त्रिक परंपरा पनपे साथ ही शिक्षक ,छात्र और शिक्षाविदो को गाँधी जी के शैक्षिक मूल्यों के प्रति विश्वास बढ़ सके।

निष्कर्ष

इस प्रकार महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों से वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को भारत बोध के पुनर्निर्माण की दिशा में सम्मिलित किया जा सकता है, इसके लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में गाँधी जी के शैक्षिक मूल्यों को सम्मिलित किया जाय, साथ ही पठ्यसहगामी गतिविधियों में गाँधी जी के शैक्षिक मूल्यों से सम्बंधित गतिविधि को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। " गाँधी जी का जंतर" के संकल्प एवं गाँधी जी द्वारा बताये गए सात सामाजिक बुराइयों को शिक्षा के सभी स्तरों में सम्मिलित किया जाना चाहिए साथ ही बुनियादी शिक्षा को वर्त्तमान चुनौतियों से जोड़कर नए स्वरूप में पुनर्रचित किया जाय, जिससे ना केवल रोजगार की समस्या को कम किया जा सके बल्कि युवायों को भी स्वावलंबी बनाया जा सके इससे विद्यार्थी न केवल कार्यबल के लिए तैयार होंगे बल्कि जिम्मेदार और संवेदनशील वैश्विक नागरिक भी बनेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. द *कलेक्टेड वर्क्स ऑफ़ महात्मा गाँधी*: वाल्यूम 48, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , भारत सरकार, नई दिल्ली, नवंबर 1971.
2. धर्मपाल, कलेक्टेड राइटिंगस, वाल्यूम 3 : द *ब्यूटीफुल ट्री: इंडिजिनस इंडियन एजुकेशन इन द एटिन्थ सेंचुरी*, अदर इण्डिया प्रेस एवं सिद्ध ,2007
3. अमित,अंग्रेजो से पहले : भारत की शिक्षा व्यवस्था ,हिंदी रूपांतरण(द *ब्यूटीफुल ट्री*), सर्व सेवा संघ-प्रकाशन,वाराणसी.
4. सुजाता.2017.*सौ साल पहले : चंपारण का गाँधी*. वाणी प्रकाशन ,पटना.
5. चन्द्र,विपिन.2008.*आधुनिक भारत का इतिहास* .ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड ,नईदिल्ली.
6. गुप्ता,एस एवं अग्रवाल जे.सी.2011. *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा* .शिप्रा प्रकाशन ,नई दिल्ली
7. कृपलानी,जे.बी.1969 .*गाँधी: हिज लाइफ एंड थॉट .प्रकाशन विभाग*, नई दिल्ली.
8. https://hi.wikipedia.org/wiki/बुनियादी_शिक्षा 24 सितम्बर 2024 को देखी गई।
9. https://www.livehindustan.com/bihar/story-hindustan-special-country-first-basic-school-facing-identity-crisis-established-by-mahatm 27 सितम्बर 2024 को देखी गई।
10. https://www.aapnabihar.com/2019/10/buniyadi-school-of-gandhi-in-bihar/ 27 सितम्बर 2024 को देखी गई।